शोध पत्र- हिन्दी

fgUnh dgkuh txr e ilkn dh Hkfedk

* Vk- Hkkouk flg Hknkfj;k

* thokth fo'Okfo|ky;] Xokfy;j

विवादों के रहते हुए भी 'सरस्वती' पत्रिका के जनवरी 1990 के अंक मे प्रकाशित 'इंदूमती' को हिन्दी साहित्य की पहली मौलिक कहानी माना जाता है। हिन्दी कहानी रचना क्षेत्र मे जयशंकर प्रसाद और प्रेमचन्द के प्रवेश से साहित्य की इस विद्या मे निरंतर विस्तार और गहराई आती गयीं । जिससें हिन्दी साहित्य में कहानी रचना की अतिरत्न धारा प्रवाहित हुई।

सरस्वती में सन्1915 में प्रकाशित सात कहानी से प्रेमचन्द का हिन्दी कहानी रचना में प्रवेश माना जाता है। इसके बाद मे हिन्दी में निरन्तर कहानियाँ लिखते रहे। इससे पूर्व वृंदावनदाल वर्मा की 'राखी बंद भाई' (1909), जयशंकर प्रसाद के 'छाया' संग्रह (सन् 1912), में संग्रहीत भवात्मक कहानियां, राधिका रमण प्रसाद की ''कानों में कंगना' (सन् 1913), प्रकाशित हो चुकी थी। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' भी(सन् 1915), 'सरस्वती' मे प्रकाशित हो चुकी थी। सन् 1915–17 के बीच 'सरस्वती 'में ज्वालादत्त शर्मा की 'मिलन' विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक की 'रक्षाबन्धन', पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की 'क्षलक्षला' कहानियां भी प्रकाशित हुई।

काशी से 'हिन्दी गल्पमाला' मासिक पत्र का प्रकाशन सन्1918 मे हुआ। इसमें जयशंकर प्रसाद की कहानियां नियमित रूप सें प्रकाशित होती रही। इस प्रकार सन्1900 में जन्मी हिन्दी कहानी सन् 1918 तक पूर्णतः प्रतिष्ठित हो गयी। इस अवधि मे उसने अपने स्वरूप को संवारा और अपनी एक पहचान भी बनायी।

प्रसाद भावान्तमक कहानियों के प्रेरणास्त्रोत रहे और प्रेमचन्द सामाजिक यथार्थवादी कहानियों के । ये दोनो सामान्तर मार्ग से एक ही गन्तव्य पर पहुंचते है। व्यक्ति के माध्यम से व्यक्ति के सामाजिक जीवन का प्रतिपादन अथवा समाज के माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तिक जीवन का आकंलन प्रयोग की दो पद्धतियां है। ये समान निष्कर्ष प्रस्तुत करती है। हिन्दी कहानीकार आरम्भ से ही व्यक्ति के सामाजिक जीवन से जुड़े रहें हैं। उनकी कहानियों में व्यक्ति के उसके परिवेश से संघर्ष का निरूपण गहरा और व्यापक होता गया है।

जयशंकर प्रसाद ने भावुकता प्रधान कहानियाँ लिखी। यद्यपि उनकी कहानियों में प्रेमचन्द जैसी बौद्धिकता नही है। तथापि सामाजिक जीवन के अनेकों अछूतें अंशो को उन्होने छुआ है कवि रूप सें प्रसाद जितने कल्पनाशील है, कहानीकार रूप में उतने ही विचारशील। उनकी कहानियों में व्यक्ति जीवन के मार्मिक अंशो की करूणापूर्ण अभिव्यक्ति है। मानव मन की व्यथा को प्रसाद ने अपनी कहानियों मे जितनी कूशलता से उकेरा है। वह अन्यत्र कम ही दिखायी देती है। 'मधुआ' 'छोटा जादूगर', 'गुंड़ा;' कहानियां पाठक को अपनी व्यथा में डुबो देती है। 'चक्रवर्ती का स्तम्भ', खंड़हर की लिपि', 'पत्थर की पुकार', 'उस पार का योगी', 'प्रतिमा' आदि कहानियों में संस्कृत गद्यकाव्य की छटा है।

परवर्ती कहानियों मे भावुकता और चित्रभयता की प्रव त्तियों के रहते मनोवैज्ञानिकता भी आती गयी है। 'आकाशदीप, कला', देवदासी, आंधी, 'इन्द्रपाल', 'सालवती', में उलक्षनपूर्ण मनः स्थिति तथा मानसिक दृंद्व को चित्रित किया गया हैं। प्रसाद ने व्यक्ति को उसके परिवेश में उकेरते हुऐ भी उसकी अपनी पहचान करायी है। उनका व्यक्ति वर्ग–व्यक्ति नहीं, अपनी सम्पूर्ण दुर्बलताओं के साथ एक संवेदनशील मानव है। ऐतिहासिक सामाजिक पृष्ठभूमि में प्रसाद ने अपने पात्रों की पहचान उनकी अपनी विशेषताओं के साथ करायी है।

उनका व्यक्ति न तो संस्था के सदस्य रूप में प्रस्तुत होता है। और न ही अपनी सत्ता की विशेष पहचान कराने के लिए। वह व्यथा कथा का अंश है। और अपने इस अंश रूप में वह निश्चित ही विशिष्ट है। 'आकाशदीप', 'पुरस्कार', 'ममता' जैसी कहानियों में भी प्रसाद ने अपने पात्रों की पहचान उनकी अपनी विशेषताओं के साथ करायी है। वे संवेदनाओं को सहलाते है, और इस प्रयास में व्यक्ति की सहजकता को उभारते है। मानव मन में गहरे पैठने की अद्भुत कुशलता प्रसाद में है। उन्होनें व्यक्ति के अपने संकल्पों विकल्पों में उभारा है। दर्शनिकता या सैद्धान्किता में उन्हे नहीं जकड़ा है। ये पात्र विलक्षण है और अपनी इस विलक्षणता में भी वे स्वाभाविक लगते है। अनजाने अनश्चीन्हें नहीं। उनका चरित्र निरूपण आयोजित या दुराग्रह पूर्ण नहीं कहा जा सकता।

प्रसाद की कहानियें मे सामाजिक मान्यताऐं कहानियो के पात्रों के व्यक्तित्व मे झलकती है। उन्होने सामाजिक समस्याओ को पात्रों के व्यक्तित्व निरूपण में ही उभारा है। पात्रों का व्यक्तित्व उनके सामाजिक परिवेश से अविच्छिन्न और अपृथक है। पात्रों का गंतव्य तक प्रसाद सामाजिक संघर्षों मे ही होता है। प्रेमचंद ने समस्याओं के परिवेश में व्यक्ति को उभारा है। प्रसाद ने समस्याओं को व्यक्तित्व के दर्पण मे दर्शाया है। 'विजया' मे विधवा विवाह, 'मीरा में अछूतोंद्वार' 'विराम चिन्ह'

में धार्मिक अंधविश्वास में इसी प्रकार दर्शाया गया है। समस्याओं के चित्रण मे प्रसाद का मन नहीं जमता। वे पात्र के मन में घुमड़ रहे संत्रास का चित्रण मनोयोग से करते है। व्यक्तिमन उसके परिवेशक से संचालित है। उसमें क्षण–क्षण में हो रहे परिवर्तनों को प्रसाद बारीकी से उभारते है। वे व्यक्ति को मूलतः भावुक, सरल, सौन्दर्यप्रिय और निष्ठावान मानते है। व्यक्तिमन में कलुशता सामाजिक परिस्थितियों की देन है। पात्रों के चरित्राकंन में प्रसार ने कल्पना का उपयोग अधिक किया है। मनोवैज्ञानिक तत्वों का कम। उनके पात्र परिस्थितियों से प्रभावित होते हुये भी उन्हें अपने अनुकूल बनाने में समर्थ है। असफलताओ से निराश नहीं होते है। अपनी मान्यताओं में जीते हुए वे जीवन का सुख उत्सर्ग में पाते है।

प्रसाद मे जीवन की कठोरताओं में कोमल भावनाओं का निरूपण अत्यंत प्रभावशाली रूप मे किया है। प्रेम उनकी कहानियों का प्रधान विषय रहा है। संघर्षपूर्ण स्थितियों में प्रेम की मार्मिक व्यंजना पाठक को गहरे मे छूती है। उदात्त भावों की अभिव्यंजना में वे शारीरिक सौंदर्य, यौवन और चापल्य को भी उभारते हैं। कहानियों की नायिकाएँ भावात्मक समर्पण ही नहीं करती, अपनी भाव भंगिमाओं से भी नायकों को लुभाती है। वे प्रेम को दिव्यता प्रदान करती है। उनकी कहानियों मे प्रेम के उदात्त रूप की ही व्यंजना है। कहानियों में नायिकाओं का प्रेम नायक को शक्ति देता है। वह उन्हें कर्तव्यपरायण, साहसी गतिशील, विजेता बनाता है। उन्होने हद्य की पवित्रता में ही प्रेम का प्रस्फुरण और पल्लवन दिखाया है। इस प्रेम में उत्सर्ग का व्यंजक है। प्रसाद प्रेम को एक अमूल्य निधि मानते है। और उसकी प्राप्ति को व्यक्ति–जीवन की महान उपलब्धि। यद्यपि जीवन के उत्कर्ष–अपकर्ष में प्रेम के जिस उदात्त रूप को उन्होने दर्शाया है। वह सामाजिक व्यक्ति के जीवन की चिर अभिलाषा अवश्य है। भाव रूप में भी प्रेम के अस्तित्व को झुठलाया नहीं जा सकता। सब कुछ जो व्यक्त हो जाए वहीं प्रेम नही है। जो व्यक्त नहीं हो पाता, वह भी प्रेम है। और कदाचित् अधिक गहरा प्रेम है। प्रसाद ने मानव जीवन के विविध पक्षों को प्रेम के इस उदात्त रूप से प्रभावित दर्शाया है।

fu"d"k &

प्रसाद ने अपनी कहानियों में व्यक्ति की वैयक्तिकता को अधिक महत्व देते हुए भी समाज के प्रति वितृष्णा का भाव व्यक्त नहीं किया। उनकी कहानियां तथाकथित आधुनिकता बोध को भी नहीं दर्शाती है। उनमें वैयक्तिकता का दुराग्रह भी नहीं है। रीतियों, नीतियों और मान्यताओं के प्रति उनमें शालीन मौन है। वे कटुता को कहीं भी उमरने नहीं देते। वे वैयक्तिकता के उद्दाम रूप को अपनी सोम्यता से दबोचे रहते है। नारी सौंदय के प्रति उनमें आसक्ति है। किन्तु कहीं भी उसके भोगवादी रूप का वीभत्स चित्रण नहीं है। वे मानसिक अनुशासन को बनाए रखने में समर्थ है।

सामाजिक समस्याओं को उन्होंने अनदेखा नहीं किया है। किन्तु किसी वाद या सिद्धान्त के आधार पर उन्हें सुलझाने का भी यत्न नहीं किया है। वे जीवन को उसकी सम्पूर्णता में विचारते है। उसे सामाजिक और वैयक्तिक जीवकन में विभाजित नहीं करते। उनके विचार में व्यक्ति अपने में ही संघर्षरत रहता है। बाहरी चुनौतियों की अपेक्षा उसे अपने से ही जूझना होता है। प्रेमचंद और प्रसाद लगभग समकालीन लेख है। दोनों ही विश्व, राष्ट्र और समाज की परिस्थितियों समान थीं, किन्तु दोनों की जीवन दृष्टि में अन्तर है। प्रसाद की दृष्टि से समाधान वह नहीं जो प्रेमचंद की दृष्टि में है। प्रेमचंद के लिए समाज से अलग हटकर कुछ विचारना सम्भव ही नहीं, और प्रसाद जीवन सुख की खोज में सामाजिक वीथियों से नहीं विचरते। दोनों लेखकों की जीवन–दृष्टियों में जीवन का अपना स्वरूप और सत्य है। दोनों हमें जीवन को उसके सम्पूर्ण रूप में पहचानने की प्रेरणा देते है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी कहानी की विकास यात्रा – ब्रहमस्वरूप शर्मा
2. जयशंकर प्रसाद की यादगरी कहानियाँ – जयशंकर प्रसाद
3. जयशंकर प्रसाद की अमर कहानियाँ – जयशंकर प्रसाद